

हमारा आधार यीशु मसीह है

हार्वेस्ट बाइबिल चैपल में चार स्तंभ

क्षमा याचना के बिना परमेश्वर के वचन के अधिकार की घोषणा करने वाला निःसंकोच प्रचार - 2 तीमुथियुस

4:2

आराधना में यीशु के नाम को ऊँचा उठाते हुए निर्लज्ज आराधना - यूहन्ना 4:24

निडर साक्षी जो निर्भीकता के साथ यीशु का सुसमाचार सुनाते हैं - इफिसियों 6:19-20

प्रार्थना की शक्ति में दृढ़ता से विश्वास करते हुए निरंतर प्रार्थना - इफिसियों 6:18

**हम क्या मानते हैं**

**सिद्धांत कथन**

**पवित्रशास्त्र** - हमारा मानना है कि पुराने और नए नियम की छियासठ पुस्तकें मानवता के सामने ईश्वर के आत्म-प्रकटीकरण का पूरा रिकॉर्ड हैं। मानव लेखक, अपनी शैली और व्यक्तित्व के अनुसार लिखते समय, पवित्र आत्मा द्वारा ईश्वर के शब्दों को रिकॉर्ड करने के लिए अलौकिक रूप से प्रेरित हुए, मूल लेखन में त्रुटि के बिना और वे जो संचार करते हैं उसमें पूरी तरह से विश्वसनीय थे। जो लोग विनम्रतापूर्वक अपने व्याकरणिक-ऐतिहासिक संदर्भ और विभिन्न साहित्यिक शैलियों के भीतर धर्मग्रंथों के अध्ययन में खुद को लगाते हैं, वे यीशु के वचन की भरोसेमंद समझ प्राप्त करेंगे और इसे पूरे जीवन के लिए अंतिम और पर्याप्त अधिकार के रूप में देखेंगे।

भजन 19:7-11; 2 तीमुथियुस 3:16-17; इब्रानियों 4:12; 2 पतरस 1:20-21

**पवित्र त्रिदेव** - हम एक जीवित और सच्चे ईश्वर में विश्वास करते हैं, जो तीन समान और पूर्ण दिव्य व्यक्तियों के रूप में पूर्ण एकता में अनंत काल तक विद्यमान है: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। ईश्वरत्व के प्रत्येक सदस्य, मुक्ति इतिहास में अलग-अलग लेकिन पूरक भूमिकाएँ निभाते हुए, बिल्कुल एक जैसी प्रकृति, गुण और अस्तित्व रखते हैं, और समान रूप से समान महिमा, सम्मान और आज्ञाकारिता के योग्य हैं।

उत्पत्ति 1:1-2, 26; यशायाह 6:1-4; मत्ती 28:19-20; लूका 3:21-22

**परमपिता परमेश्वर** - हम मानते हैं कि परमेश्वर पिता ने अपनी इच्छा के अनुसार और अपनी महिमा के लिए अपने पुत्र, यीशु मसीह के द्वारा छह दिनों में सभी चीज़ों की रचना की। वह अपनी शक्ति और अनुग्रह के वचन से सभी चीज़ों को बनाए रखता है, सभी सृष्टि पर ईश्वरीय प्रावधान और संप्रभुता का प्रयोग करता है। उसने मानवता को उद्धार प्रदान करने के लिए अपने इकलौते पुत्र को भेजकर दुनिया के लिए अपने गहरे प्रेम का प्रदर्शन किया।

यूहन्ना 3:16-17; 6:27; 10:29-30; 17:3; रोमियों 1:7; 5:8; इब्रानियों 1:3; प्रकाशितवाक्य 4:11

**ईश्वर का पुत्र** - हम मानते हैं कि यीशु मसीह, शाश्वत पुत्रने पिता की इच्छा के अनुसार प्रेम से प्रेरित होकर, मानव शरीर धारण किया। पवित्र आत्मा के चमत्कारी कार्य के माध्यम से गर्भ धारण करके, वह कुंवारी मरियम से पैदा हुआ था। पूर्ण रूप से ईश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य होने के नाते, उन्होंने एक पाप रहित जीवन जिया और बलिदान के रूप में अपना खून बहाया और हमारे स्थान पर क्रूस पर मर गए, और उन सभी के लिए मुक्ति को पूरा किया जो उनमें अपना विश्वास रखते हैं। वह तीसरे दिन मृतकों में से प्रत्यक्ष और शारीरिक रूप से जीवित हो उठा और कई गवाहों द्वारा देखे जाने के बाद, स्वर्ग में चढ़ गया। वह अब

पिता के दाहिने हाथ पर बैठता है, उनका शरीर चर्च का प्रमुख, ईश्वर और मानवता के बीच एकमात्र उद्धारकर्ता और मध्यस्थ, और एक दिन अपने मुक्ति मिशन को पूरा करने के लिए शक्ति और महिमा के साथ पृथ्वी पर वापस आएगा।

यूहन्ना 1:1-4, 18; यूहन्ना 14:8-11; कुलुस्सियों 1:15-20; 1 तीमुथियुस 3:16; इब्रानियों 2:17-18;  
प्रकाशितवाक्य 19:11-16

**पवित्र आत्मा** - हमारा मानना है कि पवित्र आत्मा, इस युग के दौरान जो कुछ भी करता है, उसमें प्रभु यीशु मसीह की महिमा करता है। वह पाप, धार्मिकता और न्याय का दोषी ठहराता है। वह उद्धार न पाए लोगों को पश्चात्ताप और विश्वास की ओर आकर्षित करता है, और उद्धार के समय विश्वासी को नया जीवन प्रदान करता है, परिवर्तित व्यक्ति को मसीह और उसके शरीर, उसके चर्च के साथ एकता में लाता है। पवित्र आत्मा बपतिस्मा देता है और उद्धार के समय स्थायी रूप से निवास करता है, मुहर लगाता है, पवित्र करता है, भरता है, मार्गदर्शन करता है, निर्देश देता है, आराम देता है, सुसज्जित करता है, सशक्त बनाता है, वास्तविक विश्वास के प्रमाण के रूप में फल उत्पन्न करता है, और विश्वासी के जीवन में सेवा के लिए आध्यात्मिक उपहार प्रदान करता है।

यूहन्ना 16:8, 13-15; अधिनियम 1:8; 2:1-4; रोमियों 8:9-17; 12:4-8; 1 कुरिन्थियों 2:10-13;  
3:16; 6:19-20; 12:4-13; गलातियों 5:16-25; तीतुस 3:5

**इंसानियत** - हमारा मानना है कि परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया - नर और मादा को

अपनी छवि और समानता में, पाप से मुक्त, खुद को महिमा देने और उसके साथ एक अंतरंग, व्यक्तिगत और निर्बाध संबंध का आनंद लेने के लिए। शैतान द्वारा लुभाए जाने पर भी

परमेश्वर की संप्रभु योजना के भीतर, पहले पुरुष और महिला ने स्वतंत्र रूप से परमेश्वर की अवज्ञा करने का चुनाव किया, जिससे सभी लोगों पर पाप और मृत्यु का अभिशाप आ गया। इसलिए, सभी मनुष्य स्वभाव से पापी हैं, चुनाव से विद्रोही हैं, और पाप से ग्रसित दुनिया और स्वयं दुष्ट के प्रभाव में हैं। हर व्यक्ति बिना किसी बचाव या बहाने के परमेश्वर से अलग हो गया है, उसके धार्मिक क्रोध के अधीन है, और अभिशाप को उलटने और पिता के साथ अपने रिश्ते को बहाल करने के लिए उद्धारकर्ता की सख्त जरूरत है।

उत्पत्ति 1:26-27; 3:1-6; भजन 139:13-16; रोमियों 1:18-20; 3:10-19, 23; 5:12, 18-19; 1

कुरिन्थियों 10:31; इफिसियों 2:10; 1 यूहन्ना 2:15-17

**मोक्ष** - हमारा मानना है कि मुक्ति किसी और में नहीं बल्कि यीशु मसीह में पाई जाती है, जो हमारे पापों के लिए एक बार के प्रतिस्थापनात्मक प्रायश्चित के रूप में हमारे स्थान पर मर गए। दुनिया की स्थापना से पहले, भगवान ने उन लोगों को चुना जिन्हें पूरी तरह से उसके सर्वोच्च अच्छे आनंद के आधार पर बचाया जाएगा। क्रूस पर यीशु मसीह के बलिदान ने दुनिया के पापों के लिए भुगतान किया, पाप और बुराई के खिलाफ परमेश्वर के धार्मिक क्रोध को पूरी तरह से संतुष्ट किया। जो लोग पाप से पश्चाताप और विश्वास में बदल जाते हैं वे पवित्र आत्मा द्वारा एक नई रचना बन जाते हैं, परमेश्वर के सामने धर्मी घोषित किए जाते हैं, और हमेशा के लिए पिता के गोद लिए हुए बच्चे के रूप में सुरक्षित हो जाते हैं। सच्चा विश्वास यीशु मसीह के प्रति

बढ़ती आज्ञाकारिता और प्रेम तथा ईश्वर की महिमा करने और अंत तक दृढ़ रहने की स्पष्ट उत्सुकता से प्रमाणित होता है।

मती 24:13; यूहन्ना 3:16-18; अधिनियम 4:12; रोमियों 7:15-25; 8:29-30, 37-39; 10:9-13; 2

कुरिन्थियों 5:21; इफिसियों 1:3-8; 2:4-9; इब्रानियों 10:10-14; 1 यूहन्ना 2:2-6

**चर्च** - हमारा मानना है कि प्रभु यीशु में विश्वास रखने पर, विश्वासी को मसीह के शरीर, एक सार्वभौमिक चर्च का हिस्सा बना दिया जाता है, जिसका मसीह प्रमुख है। इसके अतिरिक्त, विश्वासियों को आराधना, प्रार्थना, शिक्षण, संगति के लिए एक साथ इकट्ठा होना है, आस्तिक के बपतिस्मा और प्रभु की मेज के अध्यादेशों का अभ्यास करना है, आध्यात्मिक उपहारों के उपयोग के माध्यम से एक दूसरे की सेवा करना है, और शिष्य बनाने के मिशन को पूरा करना है। स्थानीय चर्च का नेतृत्व और संरक्षण कई ऐसे बुजुर्गों द्वारा किया जाना है जो यीशु मसीह की महिमा करने के अंतिम उद्देश्य के इरादे से विनम्रता, प्रेम और एकता के साथ मिलकर काम करने वाले सदस्यों की देखभाल और देखरेख करते हैं।

मती 28:18-20; अधिनियम 1:8; 2:41-47; 1 कुरिन्थियों 11:17-29; 12:7; इफिसियों 1:22-23;

4:11-16; 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9; इब्रानियों 10:24-25; 13:17; 1 पतरस 5:1-5

**और भी आने को है** - हम प्रभु यीशु मसीह की शानदार, दृश्यमान, आसन्न और विजयी वापसी में विश्वास करते हैं और उसका बेसब्री से इंतजार करते हैं। उनके दूसरे आगमन की धन्य आशा और सृष्टि और मानवता के लिए परमेश्वर की मुक्ति योजना की परिणति का विश्वासी पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जो उद्धार का आंतरिक आश्वासन और सेवा और मिशन के लिए बाहरी उत्साह पैदा करता है। हम बचाए गए और खोए हुए दोनों के शारीरिक पुनरुत्थान में विश्वास करते हैं। खोए हुए लोगों को न्याय के लिए उठाया जाएगा और नरक में अनन्त क्रोध का अनुभव होगा। बचाए गए लोगों को नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में परमेश्वर की उपस्थिति में हमेशा के लिए अनन्त आनंद के लिए उठाया जाएगा।

दानियेल 7:9-14; 12:1-4; मत्ती 10:28; 25:31-46; लूका 12:35-40; 2 कुरिन्थियों 4:16-5:10 22:1-7